Chapter. 6

षष्ठ अध्याय **उपसंहार**

समग्र रूप से आंकलन तथा अपने निष्कर्ष ।

उपसंहार

उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होता हुआ पाश्चात्य नवीन सांस्कृतिक चेतना की लहरों को आत्मसात कर रहा था, तब हिन्दी गद्य का आविर्भाव हुआ । नवीन आधुनिक विचारों, नवीन शिक्षा पद्धति और नये वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रभाव हमारे सामाजिक जीवन पर पड़ रहे थे, अतः साहित्य में उनकी प्रतिध्वनि स्वाभाविक थी इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी में आधुनिकता का संवाहक बनकर हिन्दी गद्य अवतरित हुआ । आज सृजनात्मक और उपयोगी दोनों ही प्रकार का साहित्य विपुल परिमाण में उपस्थित है । लेख, निबन्ध, प्रबंध, आलोचना, कहानी, उपन्यास, नाटक, जीवनी, रेखाचित्र, यात्रावृत्त इत्यादि सभी प्रचलित विधाओं से हिन्दी गद्य का सृजनात्मक स्वरूप सम्पन्न है ।

हिन्दी में उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में विविध सुधारवादी आन्दोलनों से प्रेरणा ग्रहण कर नवोदित और शिक्षित मध्यम वर्ग ने उपन्यास साहित्य को जन्म दिया इस समय तो कथा साहित्य बुद्धिजीवी और मध्यम वर्ग का महाकाव्य बना हुआ है । इसलिए पिछले वर्षों में विघटित या नवविकसित मानव मूल्यों और नैतिक मान्यताओं के फलस्वरूप हिन्दी उपन्यास साहित्य को एक सर्वथा नया आयाम और एक नूतन दिशा प्राप्त हुई है । समष्टिगत चेतना और व्यक्तिगत चेतना, दोनों ने, साथ ही दोनों के संघर्ष ने हिन्दी उपन्यास में सामाजिक संचेतना के प्रतिमानों को यथेष्ट सीमा तक प्रभावित किया है । साहित्यकारों की नई पीढ़ी विघटनों, विसंगतियों को, और फलतः एक भिन्न प्रकार की मानसिकता को लिए हुए बड़ी हुई है । वह एक वैचारिक, बौद्धिक संक्रान्ति से गुजर रही है । वह एक नवीन जीवन-दर्शन खोजने में लगा है । मिश्र जी के उपन्यासों का एक महत्वपूर्ण अंग है 'मूल्य' क्योंकि साहित्य के संदर्भ में दिन रात विघटित मूल्यों नये मूल्यों, जीवन मूल्यों, मूल्य मर्यादाओं आदि की चर्चा होती रहती है । उपन्यास साहित्य की आलोचना करते समय 'मूल्य' शब्द अत्यधिक प्रयोग होता है । मानव जीवन के संदर्भ में 'मूल्य' मनुष्य की वह सांस्कृतिक पूँजी है जिसके आधार पर

समाज विशेष का स्तर जाना जाता है । मूल्य समाज के जीवन में सामाजिक, धार्मिक और नैतिक पृष्ठभूमि लिए एक ऐसी वैचारिक इकाई है जिसका विकास व्यक्ति से समाज की ओर होता है जिसके आधार पर औचित्य, अनौचित्य का निर्णय करके समाज का जीवन व्यवस्थित चलता रहता है ।

मूल्य शब्द के अतिरिक्त एक दूसरा शब्द है जो कि सामयिक साहित्य में प्रचलित है वह है 'प्रतिमान' । 'प्रतिमान' शब्द का प्रयोग एक ऐसे 'मानदण्ड' के अर्थ में होता है जिसके आधार पर हम किसी रचना का परीक्षण कर कोई न कोई निर्णय लेते हैं । मनुष्य की बदलती हुयी अनुभूतियों के कारण 'मूल्य' बदलते हैं फलतः साहित्य को परखने वाला दृष्टिकोण बदलने के कारण प्रतिमान भी बदल जाते हैं । द्वितीय महायुद्ध के फलस्वरूप उत्पन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश और एक नये युग बोध ने उपन्यास कहानी कविता आदि परखने के प्रतिमान बदल दिये हैं । आज जिन्दगी योजनाबद्ध नहीं है इसलिए उपन्यास भी योजनाबद्ध नहीं है इन्सान के बदलते हुए स्वरूप को मानवीय सम्बन्धों के परिवर्तित सन्दर्भों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले सामयिक उपन्यास को निश्चित परिभाषा और प्रतिमानों में बाँधना मुश्किल है । परम्परागत आदर्शवाद में भी युवा पीढ़ी को विश्वास न होने कारण मिश्र जी के उपन्यासों में जीवन को देखने का एक नया दृष्टिकोण - मनोवैज्ञानिक यथार्थ मिलता है । इसके अतिरिक्त मिश्र जी के उपन्यास - कहानी साहित्य में व्यक्ति का चित्रण है - व्यक्ति का मन, उसकी नियति उसका भोगा हुआ यथार्थ सब कुछ व्यक्ति के चारों ओर घूमता है । अन्य पात्र किसी एक व्यक्ति के उपग्रह प्रतीत होते हैं । समाज की विशेष परिस्थितियों के कारण प्रत्येक व्यक्ति विशेषकर प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति अपने चारों ओर एक दायरा बना कर घूम रहा है ।

सामयिक साहित्य के संदर्भ में आधुनिकता और युग बोध का प्रश्न भी जुड़ा हुआ है। आधुनिक युग की जटिल मनःस्थिति और परिवेश को पकड़ पाना ही आधुनिक 'युग बोध' है । हिन्दी उपन्यास, कहानी की भी आधुनिकता एक तो महानगरों के जीवन से संयुक्त है, दूसरे 'आधुनिकता' का यह बोध वैचारिक स्तर पर अधिक गहरी संवेदना पर कम आधारित है ।

जीवन की संवेदना और परिवेश की जटिलता को पकड़ने की चेष्टा में हिन्दी कथा-साहित्य बाह्य एवं आंतरिक रूप परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा है । 'आधुनिकता' और 'युगबोध' को मिश्र जी ने अपने उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी में' सुवर्णा के माध्यम से प्रस्तुत किया है ।

इसके अतिरिक्त सेक्स और मनोविज्ञान भी मिश्र जी के उपन्यास के महत्वपूर्ण अंग हैं। उपन्यासकार मानव मन की रहस्यमयी और अन्धकार पूर्ण गुफाओं में प्रवेश करता है, उसके मात्र आत्ममंथन और आत्म-विश्लेषण करते हैं और इस प्रकार नये-नये मनोवैज्ञानिक तथ्य उद्घाटित होते हैं । इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद भारतीय संविधान में नारी को जो स्थान मिला और उसके फलस्वरूप देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक क्षेत्रों, सरकारी नौकरियों आदि में स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व और उसके अस्तित्व की नई अर्थवत्ता ने उपन्यासकारों, कहानीकारों को नारी के मन की रहस्यपूर्ण गुत्थियों, परिस्थिति विशेष में मानसिक प्रतिक्रियाओं आदि का चित्रण करने का अवसर प्रदान किया है । व्यक्ति केन्द्रित होने के कारण द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी उपन्यासों और कहानियों में स्त्री-पुरूष के सम्बन्धों को - दाम्पत्य जीवन में दाम्पत्य जीवन से बाहर या विवाह से पूर्व, नये सामाजिक संदर्भों, संस्कारगत मान्यताओं और आज के शिक्षित एवं विशेष संस्कारों में पहले स्त्री पुरूषों के सम्बन्धों को गहराई के साथ देखा परखा गया है । सामयिक नारी अनेक आवर्जनाओं से मुक्त अपने ढंग से अपना जीवन जीने पर बल दे रही है । वह अपना व्यक्तित्व स्वाधीन रखना चाहती है । जैसे 'तुम्हारी रोशनी में' सुवर्णा, 'वह/अपना चेहरा' की मिसिज आजवानी, 'हुजूर दरबार' की नेपाल सरकार और 'धीर समीरे' की सुनन्दा नारी-व्यक्तित्व के सन्दर्भ में पुरूष का आ जाना स्वाभाविक और अनिवार्य है, पुरूष का नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण आज भी बहुत कुछ वैसा ही है जैसा पहले था । 'तुम्हारी रोशनी में' सुवर्णा के प्रति रमेश का व्यवहार यह स्पष्ट करता है ।

स्त्री पुरूष का सम्बन्ध अपने में महत्वपूर्ण है किन्तु सामयिक उपन्यासकारों और कहानीकारों ने सैक्स पर अधिक बल दे दिया है । इसी का दूसरा पहलू, जो हिन्दी उपन्यासों में चित्रित हुआ है महानगरों में बसने वाले और केवल अपने-अपने व्यक्तित्वों के प्रति गलत या सही ढंग से सजग दम्पत्तियों के अजनबी सम्बन्धों, टूटते परिवारों और अकेलेपन की गाथा आज के जीवन की तेजी और व्यस्तता में अपने को 'एडजस्ट' न कर पाने और सामाजिक जीवन के सामान्य प्रवाह से अलग कट जाने के फलस्वरूप अधिक है । परिवार-विघटन की समस्या सामान्य भारतीय जीवन की न होकर कुछ व्यक्तियों के अपने भोगे हुए क्षणों या अनुभवों या यथार्थ पर आधारित हो ।

कुछ उपन्यासकार ऐसे भी हैं जो स्त्री पुरूष के सैक्स स्वातंत्रय, परिवार आदि से सम्बन्धित परिवर्तित परिवेश में दायित्व बोध का परिचय देते हुए भी देश की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि विसंगतियों और भ्रष्टताओं पर दृष्टिपात करते हैं और मध्ययुगीन संस्कारों या सामंतवादी एवं पूँजीवादी संस्कारों पर प्रहार करते और नई पीढ़ी की आशा-आकांक्षाओं का चित्रण करते हैं । जिसे 'हुजूर दरबार' में दिखाया गया है । आर्थिक विसंगतियों के कारण ही आज देश में चोर बाजारी, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, और संकीर्णता का बोलबाला है । दफतरी जीवन की नीरसता, ऊब और भ्रष्टता, स्त्री कर्मचारी के साथ अफसरों का व्यवहार, आदिम जातियों का पिछड़ापन, आंचलिक जीवन का वैविध्य आदि का चित्र भी मिश्र जी के उपन्यासों में दृष्टिगोचर होता है । मिश्र जी के उपन्यासों में जीवन के अर्थ की तलाश सही और सतही दोनों ढंगों से हुई है ।

कुल मिलाकर मिश्र जी ऐसे युवा कलाकार हैं जिन्होंने परम्परागत कथा-रूढ़ियों को तोड़ा है - कथ्य एवं कथन की दृष्टि से और शिल्प की दृष्टि से भी । मिश्र जी ने भारतीय परिवेश में परिवर्तित परिस्थितियों का चित्रण कर मानव-मूल्यों को नया आयाम देने की चेष्टा की है । उनकी रचनायें प्रभावशाली बन पड़ी है । सामयिक उपन्यास में नये जीवन की जो

खोज है, उसमें सूक्ष्मता और गहराई के साथ जो विस्तार है, परिवेश की जो मुखरता है, मोहभंग की जो अनुभूति है, जीवन की जो दुरूहता है उससे उबरने का जो प्रयास है, वह सब मिश्र जी के उपन्यासों में दिखायी देता है । इस प्रकार इनके उपन्यास आधुनिकता के विभिन्न स्तरों के सन्दर्भ में है । इनके उपन्यास मनुष्य के टूटने और बनने की प्रक्रिया की गाथा है । वह उसका अन्तः और बाहय उजागर करता है ।

शिल्प की दृष्टि से मिश्र जी के उपन्यास कथानक, पात्र, चरित्र-चित्रण, संवाद, देशकाल, वातावरण, आदि परम्परा से चले आ रहे प्रति मानव की अवहेलना करता है । उनका कथ्य न तो समय की सीमा में बद्ध है, और न उसमें पारिवारिक पीढ़िका को बहुत महत्व दिया है । वह तो एक विशेष परिवेश में जीवन यापन करते हुए, व्यक्ति के मन की खोज करता है, इसमें अभिव्यक्ति की नवीनता है । उपन्यास में अब उपलब्धियों के स्थान पर सम्भावनाएं अधिक रहती हैं, उसमें अनुभूति की प्रामाणिकता एवं परिवेश की प्रधानता खोजी जाती है, न कि कथानक और चरित्र चित्रण की प्रधानता । रचनाकार अपने उपन्यास में एक संवेदनात्मक सत्य व्यक्त करता है, जो व्यक्ति मूलक होते हुए भी समष्टिमूलक पद प्राप्त कर अपनी सार्थकता सिद्ध करता है ।

मिश्र जी के उपन्यासों की भाषा में सहजता के साथ - साथ एक नया संयोजन, बिम्ब की प्रधानता, प्रतीकात्मकता, गहरी व्यंजना आदि का समावेश मिलता है । 'लाल पीली जमीन', 'तुम्हारी रोशनी में' और 'धीर समीरे' उपन्यासों में इनकी प्रचुरता दिखायी देती है । जिन्दगी के नये पैट्रन के अनुरूप लेखक ने नये भाषायी मुहावरों की भी तलाश की है । उन्होंने अनेक देशज, आँचलिक ग्रामीण और उर्दू के शब्दों, अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के शब्दों, यहां तक कि 'ठर्रा' किस्म की गालियों का द्योतन करने वाले शब्दों का बेधड़क प्रयोग किया है, जिन्हें 'वह/अपना चेहरा', 'लाल पीली जमीन' में देखा जा सकता है । वास्तव में आधुनिक संवेदना, पीड़ा, घुटन, क्षोभ, निराशा आदि की अभिव्यंजना के लिए, वे भाषा में निरन्तर परिवर्तन कर रहे हैं, जिससे वह व्याकरण की सीमा में बद्ध नहीं रह पायी है । मुहावरों और कहावतों का भी सुन्दर प्रयोग किया है ।

नयी संवेदना और जटिल मन:स्थितियों ने नयी शैलियों को जन्म दिया है । प्रत्येक युग की नयी सृष्टि के नये फार्मूले होते हैं और उन नये फार्मूलों को सार्थक रूप प्रदान करने के लिए संवेदना, जीवन के प्रति दृष्टिकोण, विषय वस्तु, अनुभूति, सर्जनात्मक कल्पना आदि की समष्टि के रूप में जो उपकरण जुटाए जाते हैं और वस्तु-तत्व को आस्वाद बनाया जाता है, वही नई शिल्प विधि है । नई समस्यायों के लिए नये समाधान और उनके लिए नई शिल्प विधियां अपनाई जा रही हैं । उपन्यास-रचना के परम्परागत मानदण्ड ध्वस्त हो गये हैं, आज रचनाकार पाठक को अपना सहयोगी बनाना चाहता है और पाठक भी लेखक को मात्र किस्सागो के रूप में देखना पसन्द नहीं करता ।

मिश्र जी के उपन्यासों का शिल्प काफी लचीला है । लचीला इसलिए कि वे आधुनिकता के विभिन्न स्तरों को आत्मसात करने में संलग्न है । इसलिए उनके उपन्यास शिल्प को एक बँधे बँधाये माप दण्ड से परखना कठिन होगा ।

मिश्र जी ने अभावों, संघर्षों, विघटित होते मूल्यों के बीच जिन्दगी की नब्ज पकड़ने की चेष्टा की है । उन्होंने महानगरों, गाँवों और मध्यवर्गीय जीवन को अपना लक्ष्य बनाया है और नया शिल्प, नई संवेदना शीलता, युगबोध, और नई धारणायें उभारकर जीवन को बाहर और भीतर से निरखा-परखा है । व्यक्ति अपने में और समाज के संदर्भ में कहां है, इसकी खोज कर रहे हैं, व्यक्ति की नियति को पहचानने की कोशिश कर रहे हैं । आस्था और अनास्था के बीच तुमुल युद्ध छिड़ा हुआ है बहुस्तरीय जीवन को टटोलने और उसकी परतें उघाड़ने की दृष्टि से मिश्र जी की रचना शीलता का भविष्य उज्जवल है ।

उपन्यास की भाँति ही मिश्र जी कहानी में भी परिवेश के बोध की संवेदना, बाहय एवं आन्तरिक विसंगतियों, अन्तर्विरोधों, कटुताओं पारिवारिक विघटन, मूल्य-संक्रमण, स्त्री पुरूष सम्बन्धों आदि को लेकर नये मानवीय क्षितिज की खोज कर रहे हैं और अपने व्यक्ति और समाज के बीच समीकरण और संतुलन स्थापित करने की चेष्टा में संलग्न है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात साहित्य के मूल में वैयक्तिकता दिखाई देने लगी जिसमें सम्पूर्ण मानव के वैशिष्टय के साथ व्यक्ति के दायित्व और उसकी गरिमा सम्बद्ध हो गयी है । उसमें व्यक्ति अपने से, परिस्थितियों से जूझता है, संघर्ष करता है मानव के व्यक्तित्व की पवित्रता में, उसकी गरिमा में विश्वास करता है । मिश्र जी ने व्यक्ति को रूढ़ियों से मुक्त कर वैयक्तिक अनुभूति को व्यापक दायित्व बोध के साथ संपृक्त कर उसे ईमानदारी से व्यक्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं और सामाजिक संदर्भों और आधुनिकता से सम्बद्ध मानवीय व्यक्तित्व के प्रति आस्था व्यक्त कर रहे हैं । लेखक अपनी अकुलाहट, कुण्ठा, संत्रास, अस्वीकृति, नैराश्य आदि भी व्यक्त करता है, जिसे लेखक ने 'खाक इतिहास', 'नये पुराने माँ बाप', 'रगड़ खाती आत्महत्यायें' संग्रह की कहानियों में व्यक्त किया है । लेखक नये मानवीय कोण और आयाम खोजने में प्रवृत्त है ।

मिश्र जी की कहानी ने परम्परा को समेटने के साथ साथ विषय, शैली, वैचारिक स्तर आदि की दृष्टि से ताजगी प्रस्तुत की है । वे ऐसे लेखक हैं जो अपनी आन्तरिक श्रेष्ठता के बल पर अपने परिवेश को सार्थकता प्रदान करता चाहते हैं । वे परिवेश को संवेदन के स्तर पर झेलते हुए और व्यक्तिगत स्तर पर उसके साथ सम्बन्ध जोड़ते हुए नवीन मानवीय सम्बन्धों की खोज कर रहे हैं । मिश्र जी की कहानी 'पगलाबाबा' तथा 'सिर्फ इतनी रोशनी' इस संदर्भ में उद्धृत की जा सकती है । अतः आज की कहानी की संवेदनशीलता का मूल्यांकन करते समय नये जीवन के विभिन्न पार्श्वों के अनुभवों के संदर्भों को दृष्टिपथ में रखना आवश्यक है जीवन के तेजी से बदलते हुए संदर्भों के बीच लिखी जाने वाली कहानी किसी बँधे बँधाये निश्चित चौखटे में फिट करना मुश्किल है । मिश्र जी ने कहानी में स्थानीय आचार-विचार, रीति-नीति भाषा, विशिष्ट शब्दावली, जीवन की रंगीनी आदि का समावेश करके कलात्मक वैशिष्ट्य उत्पन्न किया है । उन्होंने आज के जीवन की परिवर्तन शीलता और नारी सम्बन्धी मूल्यों को अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त किया है । जीवन की आशा-निराशा, भग्न आकांक्षाएं विषमता, कटुतापन सब उसमें है मिश्र जी की 'खुद के खिलाफ' की विमला इसका सशक्त उदाहरण है, 'गिद्ध' कहानी भी इसी प्रकार की है ।

भारतीय मानव के आज के जीवन संदर्भ को दृष्टि में रखते हुए आज की हिन्दी कहानी को व्यक्ति के व्यथित मन की गाथा कहा जाये तो कोई हानि नहीं होगी । वास्तव में आज की कहानी में वातावरण और सामाजिक परिप्रेक्ष्य की प्रधानता हो चली है । जीवनानुभव और उसका सत्य प्रधान है । परिवेश उस सत्य की बाहय विशिष्टता को व्यंजित करने के लिए आवश्यक है । कहानी का धरातल एकदम मानवीय हो जाता है परिवेश और संवेदनशीलता के आधार की उत्कृष्टता या निकृष्टता के आधार पर ही मिश्र जी की कहानी 'फांस', 'पगलाबाबा', 'सिर्फ इतनी रोशनी', 'कंचकौंध', 'प्रतिमोह', आदि कहानियों का मूल्य आंका जा सकता है ।

मिश्र जी का जीवनानुभव सार्थक है और उसके आधार पर वह बदलते हुए मानवीय सम्बन्धों को सफलता के साथ विश्लेषण कर नैतिक बोध, जीवन मूल्य और उन सम्बन्धों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त कर रहे हैं । 'पगला बाबा', 'माइकल लोबो', 'अर्थओझल' इत्यादि कहानियों में यह दर्शनीय है ।

मिश्र जी की कहानियों के संदर्भ बहुस्तरीय हैं । आज के व्यक्ति की मूल्यहीनता ही उसकी नियति है वह जिस पुराने या नये मूल्य की ओर देखता है उसी को व्यक्तित्व को दबाने वाला पाता है । इसलिए भविष्य और अतीत की चिन्ता से मुक्त हो वह वर्तमान में क्षण के भोग के प्रति आसक्ति व्यक्त करता है किन्तु जीवन के अनेक स्तरीय संदर्भों के बीच गुजरते हुए भी वह जीवित अवश्य रहना चाहता है ।

मिश्र जी की कहानियों में एक सूक्ष्म यथार्थ - बोध है जो उसकी अपनी परम्परा का नवीनतम संस्करण है । मिश्र जी आधुनिकता के समर्थक होने के साथ साथ यथार्थोन्मुख भी हैं ।

मिश्र जी की शुरू की कहानियों ने एकदम तो नहीं धीरे-धीरे, पिछले रोमानी जीवन बोध से मुक्ति पाने की सफल चेष्टा की है । 'रगड़ खाती आत्महत्यायें' संग्रह की मानसिकता

अब दृष्टिगोचर नहीं होती । उनके सामने चीजें अब अधिक स्पष्ट हो गयी हैं । उनकी कहानियों में जीवन्तता है और खण्डित मूलयों के स्थान पर नवीन मूल्यों और मर्यादाओं की स्थापना का आग्रह है । वह आधुनिक मनुष्य के जीवन के प्रति करूणा और व्यंग्य की अवतारणा करती है । 'मुझे घर ले चलो' का गनेसी और 'आसमान कितना नीला' का गँवई दम्पत्ति इसके उदाहरण हैं । 'पगला बाबा' 'माइकल लोबो' 'सिर्फ इतनी रोशनी' 'प्रतिमोह' 'फाँस' 'एक बूँद उलझी आदि कहानियों में भी नवीन मूल्यों और मर्यादा की स्थापना उजागर होती है ।

मिश्र जी अनुभव बिम्बों के आधार पर जीवन के जीवन्त संदर्भों को अभिव्यक्त कर रहे हैं । कोरी वैचारिकता के अपने बुने हुए तंतु जाल से बाहर आकर उसने घटनाओं और प्रसंगों को नये ढंग से गढ़ना शुरू कर दिया है । निराशा, अनास्था, बौद्धिक तटस्थता, मृत्यु भय आदि के स्थान पर उनमें जिजीविषा और संघर्षरत होने की इच्छा है । 'आसमान कितना नीला' की कहानियां इसी प्रकार की हैं ।

मिश्र जी की कहानियां सचेतन कहानी के अन्तर्गत भी आ सकती है । सचेतन कहानी के पक्षधरों का कहना है कि यह सचेतना जीवन में छाये हुए धँधलके को दूर करती है । मिश्र जी की 'धुँधलका' 'आने वाली सुबह' 'सिर्फ इतनी रोशनी' 'फाँस' 'पगलाबाबा' कहानियां इसे स्पष्ट करती हैं । मिश्र जी की कहानियों में आधुनिक जीवन की विसंगतियों, विषमताओं और विडम्बनाओं की अभिव्यक्ति हुई है । वह आज जीवन को सूक्ष्म दृष्टि से देखकर जीवन का साक्षात्कार कर उसके प्रति आस्था व्यक्त कर नये आयाम ढूढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, और कलात्मक स्तर प्राप्त कर मनुष्य और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों में समन्वय उपस्थित करने की ओर उन्मुख हैं । उनकी यह तलाश जारी है । उनकी 'कहानी परकता' में नवीनता आ रही है, व्यक्तिगत आत्मबोध के स्थान पर समाज-सापेक्ष आत्मबोध मुखर होता जा रहा है । अत्यन्त शिक्षित होते हुए भी बेरोजगारी, नौकरियों के भ्रष्टाचार तथा विभ्रान्तता की व्यथा मिश्र जी की 'हमदर्दी' और 'बहुधन्धीय' कहानियों में स्पष्ट होती है ।

वास्तव में कहानीकार समाज का जागरूक प्रहरी होता है । वह समाज में ही जीता है और उसकी सारी संभावनाएं सामाजिक परिवेश में ही बनती बिगड़ती हैं । उसकी समस्यायें समाज के दूसरे लोगों जैसी ही होती हैं । उसे समाज में रहते हुए अपने मन की कुंठा, वर्जना, निराशा और उसी प्रकार के दूसरे भावों से जूझते हुए विषम परिस्थितियों से उबरना पड़ता है तभी वह कलाकार बनता है और यही यथार्थ कला की सच्ची मांग होती है ऐसा न होने पर उसमें मूल्य-मर्यादा पहचानने की क्षमता जाती रहती है ।

मिश्रजी ने अपनी कहानियों में राजनीति को भी अपना विषय बनाया है, जिनमें विभाजन, राजनीतिक हथकंडे और उनका सामाजिक जीवन पर प्रभाव, नेताओं की प्रवृत्ति पर व्यंग्य वर्षा भी की है । 'धाँसू' 'जनतंत्र' 'गोबर गनेस' 'बहुधन्धीय' इत्यादि में गंदी राजनीति को खुलासा किया है । आंचलिकता के आधार पर किसी ग्राम विशेष की स्थानीय संस्कृति, लोक व्यवहार की भाषा, मुहावरे तथा जीवन आदि का यथार्थ चित्रण 'फाँस', तथा 'कचकौंध' कहानियों में दिखाई देता है । भ्रष्टाचार का चित्रण करने वाली कहानियों में 'आँकड़े' कहानी को उद्धृत किया जा सकता है ।

इस काल की एक और समस्या दो पीढ़ियों का संघर्ष है । आज के युग में प्रतिमान बड़ी तेजी के साथ ढह रहे हैं और पुरानी पीढ़ी अविश्वास और विचित्र आशंका के साथ नई पीढ़ी, नये उभरने वाले मूल्यों और आधुनिकता की नवीनता की प्रवृत्तियों को देख रही है । इस विषय को लेकर मिश्र जी ने कई कहानियां लिखी हैं - 'सन्ध्यानाद' 'झूला' 'कचकौंध', 'निष्काषित', 'आसमान कितना नीला' इत्यादि इसी प्रकार की कहानियां हैं जिनमें पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष दिखाई देता है ।

मिश्र जी ने नवीन भावों के लिए नवीन भाषा का भी प्रयोग किया है उनकी भाषा सरल, वाक्य छोटे - छोटे सुबोध तथा प्रचलित शब्द यहां तक कि उर्दू, अंग्रेजी, ग्रामीण शब्दों, मुहावरों तथा कहावतों आदि का प्रयोग किया है । भाषा भाव और अभिव्यक्ति की दिशा में यह उनकी एक महत्वपूर्ण देन है ।

शिल्प की दृष्टि से समग्र रूप से विचार करने पर कथानक में ह्रास की बात प्रमुख रूप से सामने आती है । कहानी में शिल्प की दृष्टि से कथानक का ह्रास एक महत्वपूर्ण विकास है । ठोस और सुसंगठित कथानक देने की प्रवृत्ति प्रेमचन्द्र - यशपाल आदि लेखकों ने अपनाई थी किन्तु आज जीवन की जटिलताओं, दुरूहताओं और विषमताओं के फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति का स्वत्व, निजत्व या अहं एक विशेष रूप में विकसित हुआ है इससे व्यक्ति अपने में सीमित हो गया है ।

गोविन्द मिश्र ने अपनी कहानियों में व्यक्ति को उसके यथार्थ परिवेश में देखते हुए मानव-व्यक्तित्व की पूर्णता को व्यापक सामाजिक संदर्भों में पूर्ण यथार्थता से स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है । मानव-मन का अध्ययन या चरित्र का विश्लेषण सामाजिक परिवेश के परिप्रेक्ष्य में होने के कारण जो सत्य स्पष्ट किये वे जीवन धारा से सम्बन्धित हैं इसलिए महत्वपूर्ण हैं ।

जहाँ तक पात्रों का सम्बन्ध है मिश्र जी के पात्र काल्पनिक या गढ़े हुए नहीं हैंवे अपने आस पास ही दिखाई देते हैं । इस दृष्टि से मिश्र जी की कहानी प्रेमचन्द्र यशपाल की परम्परा से सम्बद्ध है । उन्होंने कहानी के पात्रों के चुनाव के लिए अपने आस पास के परिचित यथार्थ परिवेश, जीवन और समाज को देखा है और वही से पात्रों को लेकर कहानी की रचना की । इन यथार्थ पात्रों को उनके अन्तस एवं बाहय सामंजस्य से पूर्ण बनाने और अपने ही व्यक्तित्व के अनुरूप जीवन में गतिशील होने की सहज एवं स्वाभाविक प्रक्रिया उनकी कहानी में दिखाई देती है । इन पात्रों के चरित्र चित्रण के सम्बन्ध में भी अनेक नवीनताएं लक्षित हुई हैं । इस काल की सभी प्रमुख प्रवृत्तियां - मनोविज्ञान, फ्राइडवाद, गांधीवाद, समाजवाद एवं भारतीय दर्शन इन पात्रों के माध्यम से व्यक्त हुई हैं ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि मिश्र जी के कहानी लेखन में एक नयापन है, ताजगी है । वे अपनी कहानियों में व्यक्ति और समाज में तादात्म्य बैठाने का प्रयत्न कर रहे हैं । संस्कृति के आन्तरिक मूल्यों की खोज कर रहे हैं, वे सामयिक परिस्थितियों को लेकर

नहीं परिस्थितियों से उत्पन्न प्रभाव को लेकर लिख रहे हैं । जीवन, समाज, युग-बोध और भाव-बोध के परस्पर जटिल सम्बन्धों के फलस्वरूप उत्पन्न प्रक्रिया का पूर्ण कलागत ईमानदारी से चित्रण और समाज के बीच मानवीय गरिमा के अन्वेषण के साथ-साथ उसमें लेखक द्वारा अपने को पहचानने का प्रयास कर रहे हैं । उनकी कहानियां रूढ़ियों, वर्जनाओं और अन्धविश्वासों के स्थान पर नये मानवतावादी मूल्यों की व्यंजना और उनके संरक्षण पर बल देती हैं, साथ ही नये मानवीय आयामों की खोज कर रही है उनकी भाषा कथ्य और साक्षात् बोध के अनुरूप होती है और इनके अनुरूप उनकी कहानी नई भाषा की तलाश करती रहती है । शिल्प के क्षेत्र में निरन्तर प्रयोगशीलता उनकी कहानी की पहचान है, उसका शिल्प अनुभूति और परिवेश के प्रति सच्चाई पर निर्भर करता है यथार्थता, व्यंग्यात्मकता, संवेदनात्मकता उनकी शैली की विशेषताएं हैं ।

उपन्यास तथा कहानी की भाँति ही मिश्र जी को निबन्ध तथा यात्रा वृत्त लेखन में भी अद्वितीय स्थान प्राप्त है । इनके अधिकांश निबन्ध विचारात्मक निबन्धों में गिने जा सकते हैं क्योंकि इन निबन्धों में तर्कपूर्ण विचारों की प्रधानता है और यत्र-तत्र आलोचनात्मक विचारों को भी समाहित किया गया है । मिश्र जी के निबन्धों में विवेचना, गवेषणा तथा विश्लेषण पद्धति के साथ बुद्धि तत्व का भी प्राधान्य देखा जा सकता है । 'साहित्य का संदर्भ' निबन्ध संग्रह के 'औद्योगिक एवं महाजनी संस्कृति प्रदूषण' 'रचना प्रक्रिया के मूल बिन्दु', 'प्रेमचन्द' 'आज की कहानी', 'कथा साहित्य और आज का आदमी', 'हिन्दी उपन्यास', 'जीने की तकलीफ और भारतीय परिवेश', इत्यादि निबन्ध इसी प्रकार के हैं ।

कथाभूमि कृति के निबन्ध वर्णनात्मक एवं भावात्मक निबन्धों की श्रेणी में आते हैं । इन निबन्धों में बाँदा, इलाहाबाद, इंग्लैण्ड जैसे देश विदेशों के आधार पर स्थान चित्रण, बुन्देली महाकवि ईसुरी', जनतांत्रिक कवि मैथिलीशरण गुप्त 'कलात्मक छल से दूर टैगोर की कहानियां' निबन्धों के आधार पर व्यक्तित्व विश्लेषण होने से वर्णनात्मक निबन्धों का रूप माना जा सकता है । ये निबन्ध मिश्र जी के लिखे हुए को और अधिक स्पष्ट करते हैं तथा उनकें मूल विचारों तक पहुँचने की सामर्थ्य रखते हैं ।

'कथा भूमि' के निबन्ध अतीत से सम्बन्धित निबन्ध हैं जो व्यक्तिगत भी हैं जिनमें लेखक ने अपने उन गाँवों और कस्बों के परिचित वातावरण का स्मरण किया है जहाँ वे प्रारम्भिक जीवन में रहे थे । 'कथा भूमि' में संकलित निबन्धों में लेखक के बहुपरिचित स्थानों विशेषकर बाँदा में व्यतीत किये गये समय की स्मृतियाँ हैं, अपने स्वप्न हैं । बुन्देलखण्डी मिट्टी से रचे पचे अपने अंतरंग क्षणों की स्मृति है जिसमें लेखक को जीवन को विस्तार से देखने का आधार प्रदान किया है ।

गोविन्द मिश्र लेखक की दृष्टि से व्यवसायी नहीं है, न ही यश प्राप्ति उनका उद्धेश्य है, वे तो समर्पण भाव से लिख रहे हैं उनके लेखन में एक पीड़ा है, वेदना है, आज के गिरते नैतिक मूल्यों के प्रति छटपटाहट है और श्रद्धालुओं के प्रति श्रद्धा है तो बढ़ती अमानवीयता के प्रति विकलता भी है । वे अपने निबन्धों के द्वारा आज के साहित्य और साहित्यकारों की दशा - दुदर्शा और दिशा का आंकलन करना चाहते हैं । साहित्य के गिरते बदलते स्तर से भी वे उद्विग्न हैं अतः यथार्थ का चित्रण करने से वे नहीं चूकते ।

गोविन्द मिश्र के निबन्ध बहुमुखी हैं 'लेखन और समाज परिवर्तन' जैसे निबन्ध सीधे साहित्य के यक्ष प्रश्नों से जुड़े हैं । 'महाविनाश के घेरे में आदमी' और 'बुद्धि की यह जहरीली गैस' जैसे निबन्ध गैस त्रासदी के परिवेश पर प्रतिक्रिया स्वरूप लिखे गये हैं । सारिका कथा-प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल के सदस्य के रूप में दी गयी साहित्यिक टिप्पणियां नवोदित लेखकों के लिए उपयोगी सुझाव के रूप में प्रशंसनीय हैं ये टिप्पणियां साहित्य के गम्भीर प्रश्नों पर बड़े सुलझे विचार सामने रखती है ।

मिश्र जी के निबन्धों की भाषा और शैली कहानी और उपन्यास की भाँति ही विविधतामयी है कथ्य के अनुरूप ही उसका रूप दिखाई देता है ।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी मिश्र जी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध की भाँति ही यात्रा वृत्तों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है । उन्होंने यात्रा वृत्त के माध्यम से पाठक को देश-विदेश की बहुमूल्य जानकारियां दी हैं । उन्होंने अपने पहले यात्रावृत्त में अपनी त्रैमासिक ब्रिटेन और यूरोप यात्रा का लेखा जोखा प्रस्तुत किया है । समाज और व्यक्तियों के अतिरिक्त इसमें अनेक सुरम्य स्थलों के रोचक तथा सजीव वर्णन किया है । इस यात्रा वृत्त में एक विशेषता यह देखने को मिलती है कि उन्होंने पश्चिम प्रवास के दौरान जो अनुभव किया उन्हें बड़ी सफाई और संवेदना के साथ समेटा है । लेखक का निष्कर्ष है - "पश्चिम में सुर्खी तो है लेकिन वह आयी हुई आँखों की मिचमिची रक्ताभ सुर्खी है" - मार्मिक लगता है सामयिक स्तर पर दो जातियों और दो संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। लेखक अपने साथ भारतीय संस्कारों की तस्वीर लेकर उन्हें विदेशियों से मिलाता रहा है यह कमी थोड़ी अखरती है । ब्रिटेन और बेल्स, फ्रान्स जैसे देशों के प्रसिद्ध नगरों (शहरों) नदी, समुद्र तटों तथा ऐतिहासिक स्थलों का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है । अपने यात्रा प्रवास के दौरान अनेक प्रसिद्ध लेखक संस्थानों से भी सम्पर्क साधा है। दूसरे यात्रावृत्त में भी यूरापीय देशों की यात्रा है । ये देश हैं पश्चिम जर्मनी, आस्ट्रिया चैकोस्लावाकिया और हंगरी । बीच में पूर्वी जर्मनी का भी चित्रण है । यात्रा वृत्त एक विवेकशील सुसंस्कृत भारतीय की समूची पश्चिमी संस्कृति पर खोजपूर्ण टिप्पणी के रूप में उभरता है । प्रारंभ हुआ है पश्चिमी जर्मनी से और अन्त हुआ है हंगरी में । मिश्र जी का तीसरा यात्रा वृत्त स्वदेश के विभिन्न अंचलों में की गयी यात्रा पर आधारित है । यह छः भारतीय अंचलों का वास्तविक यात्रा वृत्त है इसमें मध्य प्रदेश के बस्तर जिले के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन करते हुए आदिवासी जनजातियों के जीवन पर प्रकाश डाला है । अंडमान निकोबार द्वीप समूह की प्राकृतिक छटा, समुद्र तटीय दृश्य, स्वतन्त्रता सेनानियों द्वारा बसाई गयी बस्तियां और यहां की संस्कृति को सुन्दर ढंग से उभारा है। राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र और वहां के गुरूवायोर, श्रीनाथ द्वारा मंदिरों की भव्यता के साथ हल्दी घाटी से सम्बद्ध वीरता के अवशेषों का स्मरण करते हुए यहाँ की विशेषताओं पर प्रकाश डाला

है । पंचमढ़ी, तामिया, धूमगढ़ और महादेव स्थलों की प्राकृतिक सुन्दरता, गुफाओं, जंगलों, नदियों के वर्णन, डाक बंगलों और आदिवासियों के जनजीवन को भी सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया है । असम, अरूणाचल, मेघालय, नागालैण्ड आदि का प्राकृतिक सौन्दर्य और वहां की जनजातियों की संस्कृति का उल्लेख है ।

मिश्र जी के यात्रा वृत्त में यह बात सामने आती है कि उन्होंने प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ आदिवासियों, जनजातियों की संस्कृति उनकी जीवन शैली, रहन-सहन, परम्पराओं को समझने का प्रयत्न किया है और फिर उसे प्रस्तुत किया है । कुल मिलाकर मिश्र जी के तीनों यात्रा वृत्त अत्यन्त यथार्थ, सजीव, प्रभावपूर्ण, मनोरंजक और दिलचस्प बन पड़े हैं । इनमें उनके गहन अनुभव भी समाहित हैं ।

निष्कर्ष यह है कि मिश्र जी के कथ्य में एक नयापन है, प्रवाह है । दूसरे वे किसी भी वाद से प्रतिबद्ध नहीं हैं । वे मानव मन का अध्ययन और विश्लेषण सामाजिक परिपेक्ष्य में करते हैं और जो सत्य स्पष्ट करते हैं वे जीवन धारा से सम्बन्धित होते हैं । खुलापन और निर्भयता उनके साहित्य की विशेषता है जो कि आज के संदर्भ में महत्वपूर्ण है ।

वे इसी प्रकार अपनी लेखनी से साहित्य के भंडार को समृद्ध करते रहे ।